अध्याय 30

लिआ और राहेल के मध्य प्रतिस्पर्धा

अध्याय 30 का प्रथम भाग याकूब की पत्नियों के मध्य बच्चे जनने द्वारा उसका ध्यान प्राप्त करने की प्रतियोगिता की कहानी को जारी रखता है। इस प्रतिस्पर्धा के कारण एक बड़ा परिवार बन गया (29:31-30:24)। शेष अध्याय इस बारे में है कि कैसे याकूब बकरियों और भेड़ों के झुण्डों में धनाढ्य हो गया (30:25-43)। इसका समापन इस कथन के साथ होता है "सो वह पुरूष अत्यन्त धनाढ्य हो गया, और उसके बहुत सी भेड़-बकरियां, और दासियां और दास और ऊंट और गदहे हो गए" (30:43)।

राहेल की दासी के बेटे (30:1-8)

[1]जब राहेल ने देखा, कि याकूब के लिये मुझ से कोई सन्तान नहीं होती, तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी: और याकूब से कहा, "मुझे भी सन्तान दे, नहीं तो मर जाऊंगी।" [2]तब याकूब ने राहेल से क्रोधित हो कर कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूं? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है।" [3]राहेल ने कहा, "अच्छा, मेरी दासी बिल्हा हाजिर है: उसी के पास जा, वह मेरे घुटनों पर जनेगी, और उसके द्वारा मेरा भी घर बसेगा।" [4]तब उसने उसे अपनी दासी बिल्हा को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो; और याकूब उसके पास गया। [5]और बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब से उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। [6]और राहेल ने कहा, "परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुन कर मुझे एक पुत्र दिया।" इसलिये उसने उसका नाम दान रखा। [7]राहेल की दासी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और उत्पन्न हुआ। [8]तब राहेल ने कहा, "मैं ने अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपट कर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई।" सो उसने उसका नाम नप्ताली रखा।

आयत 1. यह घटना प्रकट रूप से उस अन्तिम दृश्य को आगे बढ़ाता है जो पिछले अध्याय में था, दोनों ही स्थानों पर लेख राहेल की बाँझ दशा का उल्लेख करता है। दोनों ही खण्ड कुछ अतिरिक्त का भी उल्लेख करते हैं जो विदित (पहचाना गया) था। प्रभु ने देखा कि "लिआ अप्रिय थी" और गर्भवती नहीं हो रही थी, तो उसने "उसकी कोख खोल दी" और उसे जनने के योग्य कर दिया (29:31)। इस दृश्य में, **राहेल ने देखा कि**, लिआ की तुलना में, वह **याकूब** के लिए अभी भी **बच्चे** जनने में असमर्थ है। इसलिए वह अपनी **बहन से डाह**[1] **करने**

लगी और अपने पति से माँग की, **"मुझे भी सन्तान दे, नहीं तो मैं मर जाऊँगी।"** राहेल की लिआ के प्रति डाह की जड़ प्राचीन सभ्यता में बाँझ स्त्री के अपमान में थी (देखें 30:23; 1 शमूएल 1:1-18)। बच्चे जनना वह विलक्षण कार्य था जिससे स्त्री को स्वाभिमान, तथा जीवन में अर्थ और उद्देश्य प्राप्त होता था। मृत्यु संबंधित उसका कथन अपने पति पर बरसने और अपने बाँझ होने के लिए उसे ज़िम्मेदार ठहराते समय उसके दुःख और पीड़ा के कारण अतिश्योक्ति था। उसका यह बरसना हृदय विदारक और विडम्बना पूर्ण, दोनों ही था। उसका मानना था कि यदि वह सन्तान पैदा ना कर सकी तो वह मर जाएगी; और कई वर्ष पश्चात, वह बच्चा जनते हुए ही मरी, जब उसका दूसरा बच्चा पैदा हुआ (35:16-19)।

आयत 2. याकूब राहेल से बहुत गहराई से प्रेम करता था। (29:20, 30), और उसके गर्भवती ना हो पाने के कारण होने वाली उसकी हताशा के प्रति संवेदनशील था। लेकिन, इस बार, उसका प्रत्युत्तर क्रोध और कुंठा से भरा था क्योंकि राहेल ने अपने बाँझ होने का दोषी उसे ठहराया था। उसने कहा, **"क्या मैं परमेश्वर हूं? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है?"** यह ऐसा प्रश्न था जिसके उत्तर की आवश्यकता नहीं थी, और साथ ही यह फटकार भी थी। याकूब के पास, परमेश्वर के विपरीत, कोख खोलने या बन्द करने की सामर्थ नहीं थी। वह अपनी पत्नी को गर्भवती तो कर सकता था, लेकिन जो राहेल माँग रही थी उसका प्रमाण वह नहीं दे सकता था। याकूब का इन्कार उत्पत्ति के अनेकों लेखों के अनुसार है जो इसकी पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर ही कोख को खोल या बन्द कर सकता था (4:1, 25; 16:2; 17:16; 18:10-14; 20:17, 18; 21:1, 2; 25:21; 29:31; 30:6, 17, 22)।

आयत 3. यह समय आने तक, राहेल आशा छोड़ चुकी थी कि परमेश्वर उसके पक्ष में कार्य करेगा और बच्चा जनने के द्वारा उसकी स्वाभाविक सन्तान होगी। उसने प्राचीन निकटपूर्व के रिवाज़ का पालन किया और लेपालक मातृत्व का मार्ग चुना, जैसा सारा ने किया था हाजिरा के द्वारा (16:1-4)। जो भी बच्चा उसकी निजी दासी से पैदा होता, राहेल उसकी वैध माता होती; इसलिए उसने याकूब से कहा, **"मेरी दासी बिल्हा हाजिर है: उसी के पास जा, वह मेरे घुटनों पर जनेगी, और उसके द्वारा मेरा भी घर बसेगा।"** घुटनों पर जनेगी कहना यह कहने की सांकेतिक विधि थी कि जो नया जन्मा बच्चा होगा उसे लेकर उसके घुटनों पर रखा जाए जिसके पास उसे अपना स्वीकार करने का विशेषाधिकार हो (50:23; देखें 48:5, 12)। प्राचीन रीति के अनुसार, राहेल ने याकूब को उकसाया कि वह उसकी दासी बिलहा को गर्भवती करे जिससे वह बच्चा पाकर उसकी वैध माता हो जाए।

आयतें 4, 5. प्रकट रूप से याकूब ने राहेल के सुझाव का कोई विरोध नहीं किया; तब **उसने उसे अपनी दासी बिल्हा को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो; और याकूब उसके पास गया**। कभी कभी "पत्नी" और "दासी" शब्द कुलपतियों के युग में एक दूसरे के पर्यायवाची के समान प्रयोग किए जाते थे। तीन स्त्रियों को इन दोनों शब्दों से संबोधित किया गया है: हाजिरा (16:3; देखें 25:6), केतूरा

(25:1; देखें 25:6; 1 इतिहास 1:32), और बिल्हा (30:4; 35:22)। ये दासियाँ अब्राहम और याकूब की क्रमशः दूसरे दर्जे की पत्नीयाँ थीं; और वे कुलपतियों की पत्नियों के आधीन बनी रहीं, जो इनकी स्वामिनी थीं। कुलपतियों के युग के पश्चात, "पत्नी" और "दासी" शब्द का एक ही व्यक्ति के लिए उपयोग होने बन्द हो गए। उत्पत्ति जिल्पा को दासी कहकर संबोधित नहीं करती है, जबकि उसका वही सामाजिक स्तर था जो बिल्हा का था (30:9; 37:2)। राहेल के उकसाने के अनुसार, बिल्हा याकूब की दूसरे दर्जे की पत्नी हो गई; उसने उसके साथ यौन संबंध स्थापित किए, जिससे **वह गर्भवती हुई और उसे** [उसका] **एक पुत्र उत्पन्न हुआ**।

आयत 6. अब्राहम की पत्नी सारा के विपरीत (16:5, 6; 21:9-13), राहेल अपनी दासी द्वारा बेटे के पैदा होने से बहुत आनन्दित हुई। उसने इसे ईश्वरीय न्याय चुकाना समझा। उसने कहा, **"परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुन कर मुझे एक पुत्र दिया।"** यह कथन संभवतः इस बात को दिखाता है कि राहेल परमेश्वर से बच्चे के लिए प्रार्थना कर रही थी और जब, बिल्हा पुत्र जनी, उसने उसकी सुनने और प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए परमेश्वर की स्तुति की। क्योंकि लेखक ने राहेल के लिए याकूब द्वारा की गई किसी प्रार्थना का उल्लेख नहीं किया है, जैसा कि इसहाक द्वारा रिबका के लिए प्रार्थना करने का हुआ है (25:21), पाठक केवल विचार ही कर सकता है कि याकूब अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना करने के महत्व में अभी तक विश्वास नहीं करता था।

बिल्हा केवल कहने भर को माता थी। वैध रीति से बच्चा राहेल का था, इसलिए उसका विशेषाधिकार था कि वह उसका नामकरण करे। उसने **उसका नाम दान रखा**, जो कि शब्द "न्याय चुकाने" (דִּין, *दिन)* या "न्यायी"[2] का अलंकरण है। पुराने नियम में परमेश्वर को अकसर राष्ट्रों का न्याय करने वाला (15:14; अय्युब 36:31; भजन 7:8; 9:8; 96:10), साथ ही निर्धनों, ज़रूरतमन्दों, और धर्मियों का न्याय चुकाने वाला (1 शमूएल 24:15; भजन 68:5; 76:9; 140:12) वर्णित किया गया है। राहेल ने इस बेटे के जन्म को केवल परमेश्वर से मिली आशीष के रूप ही में नहीं देखा; उसने उसे उस न्याय को चुकाने वाला देखा जो उसके प्रति बकाया था क्योंकि वह निःसन्तान होने की निःसहाय पीड़िता थी।

आयतें 7, 8. कुछ समय पश्चात, **राहेल की दासी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और उत्पन्न हुआ।** फिर से राहेल अति आनन्दित हुई। **उसने उसका नाम नप्ताली रखा**, क्योंकि, **"मैं ने अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई।"**[3] जिस इब्रानी कथन का अनुवाद "लिपटकर मल्लयुद्ध" हुआ है उसका शब्दार्थ है "परमेश्वर से मल्ल्युद्ध।" संज्ञा "नप्ताली" का उच्चारण संज्ञा "मल्ल्युद्ध" (נַפְתּוּלִים, *नप्थुलिम)* के समान है। यहाँ "परमेश्वर" के लिए शब्द है אֱלֹהִים *(एलोहीम)*; लेकिन यहाँ इसका वर्णनात्मक प्रयोग समझा जाना चाहिए, अर्थात कुछ "सामर्थी" या "महान।"[4] स्पष्टतः राहेल ने अपने जीवन के अनुभव को लिआ के साथ स्पर्धा के समान देखा; और क्योंकि

अब वह नप्ताली की वैध माता थी, उसका दावा था कि वह स्पर्धा में प्रबल हो रही है।

लिआ की दासी के पुत्र (30:9-13)

9जब लिआ: ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूं, तब उसने अपनी दासी जिल्पा को ले कर याकूब की पत्नी होने के लिये दे दिया। 10और लिआ: की दासी जिल्पा के भी याकूब से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 11तब लिआ: ने कहा, "अहो भाग्य!" सो उसने उसका नाम गाद रखा। 12फिर लिआ: की दासी जिल्पा के याकूब से एक और पुत्र उत्पन्न हुआ। 13तब लिआ: ने कहा, "मैं धन्य हूं; निश्चय स्त्रियां मुझे धन्य कहेंगी।" सो उसने उसका नाम आशेर रखा।

आयत 9. वृतांत जारी रहता है लिआ के एहसास के साथ कि **उसने बच्चे जनने बन्द कर दिए हैं**, जो कि 29:35 कि पुनः आवृति है। इसका तात्पर्य है कि दोनों प्रतिस्पर्धी बहिनों की दासियों द्वारा बच्चे जनना (30:1-8, 9-13) समकालीन था ना कि क्रमवार। **लिआ** ने भी उसी युक्ति का प्रयोग किया जिसका राहेल ने किया था। लिआ ने **अपनी दासी जिल्पा** को अपने पति **याकूब** को **दूसरे दर्जे की पत्नी** के रूप में देने का निर्णय लिया।

आयतें 10, 11. बिल्हा के समान (30:4, 5), **जिल्पा** को भी गर्भवती होने में कोई कठिनाई नहीं हुई और उसने **याकूब** को **पुत्र** दिया। इसके साथ **लिआ** ने पुकारा, **"अहो भाग्य** [בָּגָד, *बेगाद*]**!"** NIV उसे कहते हुए उद्धत करती है "कैसा अच्छा भाग्य!" शब्दालंकरण प्रयोग करते हुए लिआ ने उसका नाम "गाद" रखा। "गाद" ("भाग्य") बाद के भविष्यवाणी साहित्य में एक देवता का नाम है। यशायाह 65:11, 12 कहता है, "परन्तु तुम जो यहोवा को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाग्य देवता के लिये मेज़ पर भोजन की वस्तुएं सजाते ... मैं तुम्हें गिन गिनकर तलवार का कौर बनाऊंगा।" कुछ उस अर्थ को यहाँ भी लागू करते हैं; परन्तु इस परिच्छेद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो कोई ऐसा संकेत दे कि लिआ ने इसे किसी अन्यजाति देवता की आशीष समझा हो। इसके विपरित, लिआ का सांसारिक भाव से विचार था कि यह "अच्छे भाग्य" से हुआ है। वास्तव में एनजेपीएसवी में आया है "क्या भाग्य है!"

आयतें 12, 13. जब **लिआ की दासी जिल्पा** ने याकूब से दूसरे पुत्र को जन्म दिया, लिआ ने कहा, **"मैं धन्य हूँ; निश्चय स्त्रियाँ मुझे धन्य** [אָשַׁר, *अशेर*] **कहेंगी।"** यह उच्चारण संदर्भ के जारी रहने का सुझाव देता है: सभी स्त्रियाँ लिआ को, जो जिल्पा से जन्मे एक और पुत्र की वैध माता थी, धन्य कहेंगी। ऐसी ही घटना न्यायियों के समय में भी हुई, जब बेतलेहम की स्त्रियों ने रूत द्वारा ओबेद के जन्म पर नाओमी को आशीषित कहा: "तब स्त्रियों ने नाओमी से कहा, यहोवा धन्य है, जिसने तुझे आज छुड़ाने वाले कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; इस्राएल में इसका बड़ा नाम हो ..." (रूत 4:14, 15)। इस पुत्र द्वारा लिआ को मिले आनन्द

के कारण, उसने उसका नाम **अशेर** रखा, जिसका अर्थ है "प्रसन्न" या "आशीषित" (अय्युब 29:11; भजन 72:17; नीति. 31:28; श्रेष्ठ. 6:9)।[5] अब वह, न्यायिक तौर से, छः पुत्रों की माता थी।

दूदाफलों के लिए सौदेबाज़ी और लिआ के कनिष्ठ बच्चों का जन्म (30:14-21)

[14]गेहूं की कटनी के दिनों में रूबेन को मैदान में दूदाफल मिले, और वह उन को अपनी माता लिआ: के पास ले गया, तब राहेल ने लिआ: से कहा, "अपने पुत्र के दूदाफलों में से कुछ मुझे दे।" [15]उसने उस से कहा, "तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या छोटी बात है? अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है?" राहेल ने कहा, "अच्छा, तेरे पुत्र के दूदाफलों के बदले वह आज रात को तेरे संग सोएगा।" [16]सांझ को जब याकूब मैदान से आ रहा था, तब लिआ: उस से भेंट करने को निकली, और कहा, "तुझे मेरे ही पास आना होगा, क्योंकि मैं ने अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल लिया।" तब वह उस रात को उसी के संग सोया। [17]तब परमेश्वर ने लिआ: की सुनी, सो वह गर्भवती हुई और याकूब से उसके पांचवां पुत्र उत्पन्न हुआ। [18]तब लिआ: ने कहा, "मैं ने जो अपने पति को अपनी दासी दी, इसलिये परमेश्वर ने मुझे मेरी मज़दूरी दी है।" इसलिए उसने उसका नाम इस्साकार रखा। [19]लिआ: फिर गर्भवती हुई और याकूब से उसके छठवां पुत्र उत्पन्न हुआ। [20]तब लिआ: ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है; अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उस से छः पुत्र उत्पन्न चुके हैं।" से उसने उसका नाम जबूलून रखा। [21]तत्पश्चात्उसके एक बेटी भी हुई, और उसने उसका नाम दीना रखा।

आयत 14. वृतांत आगे बढ़कर बसन्त में **गेहूँ की कटनी के समय** को पहुँचता है। बालक **रूबेन** को मैदान में **दूदाफल** मिले, और वह **उन्हें अपनी माता के पास ले आया**। दूदाफल ऐसा पौधा है जिसमें कोई तना नहीं होता बस बड़े, हरे पत्ते जो धरती की सतह पर जड़े से निकलते हैं। पत्तों के मध्य में बैंगनी या हरे सफेद से फूल आते हैं, जिनसे पीला लाल फल निकलता है जो छोटे सेब या आलूबुखारे जैसा दिखता है। उससे अजीब सी सुगन्ध आती है जिसे प्रचीन लोग मानते थे कि कामोद्दीपक है और प्रजननशक्ति को बढ़ाता है।[6] यद्यपि प्राचीन साहित्य में दूदाफलों के अनेकों हवाले हैं, बाइबल के लेखों में उनका उल्लेख केवल यहाँ और शारीरिक संबंध के संदर्भ में श्रेष्ठगीत 7:13 में ही है।

यह जानने पर कि रूबेन इस सुगंधित फल में से कुछ अपनी माँ के पास लाया है, **राहेल** चतुराई से **लिआ** के पास आई और कहा, **"अपने पुत्र के दूदाफलों में से कुछ मुझे दे।"** प्रकट है कि उस महिला का यह मानना था कि वे कन्द उसके गर्भवती होने और बच्चा जनने की क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

आयत 15. लिआ ने राहेल को ज़ोर से फटकार लगाई, यह कहते हुए कि ना

केवल उसने उसके **पति** को ले लिया है पर अब उसके पुत्र के दूदाफलों को भी लेना चाहती है। आगे के वृतांत से लगता है कि, याकूब की चहेती पत्नी होने के कारण राहेल को यह निर्णय करने का अधिकार था कि प्रति रात्रि कौन सी पत्नी या दासी उसके साथ सोने पाएगी। एक ऐसे समाज में जहाँ स्त्री का महत्व और स्वाभिमान मुख्यतः अपने पति को पुत्र दे पाने पर निर्भर करता था, हम अनुमान लगा सकते हैं कि याकूब की पत्नियों में कैसी ईर्ष्या रही होगी। गर्भवती होने के लिए आतुर, **राहेल** ने लिआ को वचन दिया कि **"तेरे पुत्र के दूदाफलों के बदले वह आज रात तेरे संग सोएगा।"**

आयत 16. यह अनुच्छेद **याकूब** को, दोनों बहिनों के मध्य उसके बच्चे जनने की स्पर्धा में, बिलकुल निष्क्रीय दिखाता है। इस घटना की विडंबना को नज़रन्दाज़ नहीं करना चाहिए: याकूब जिसने एसाव और इसहाक के साथ जोड़तोड़ किया था, अपने जीवन भर अपने साथ जोड़तोड़ होते देखता रहा। जब दिन भर के काम के **बाद याकूब मैदान से लौट कर आया**, तो **लिआ** को **अपनी ओर आता देख कर** शायद चकित हुआ होगा - वह और भी चकित तब हुआ होगा जब उसके साथ उसे उस रात सोना पड़ा, क्योंकि उसने अपने **पुत्र के दूदाफलों** द्वारा उसे **किराए** पर ले लिया था। याकूब इस समझौते के बारे में बिना कोई दर्ज प्रश्न किए सहमत हो गया; तब वह उस रात उसी के संग सोया।

आयत 17. इससे आगे की आयतों में, लेख यह स्पष्ट कर देता है कि उन महिलाओं के अन्धविश्वास के बावजूद, दूदाफलों का लिआ के गर्भवती होने से कोई लेना देना नहीं था। वह **परमेश्वर था जिसने लिआ की सुनी, और उसे याकूब का पाँचवाँ पुत्र जनने की सामर्थ दी** (देखें 29:31-35)। एक बार फिर विडंबना स्पष्ट है: लिआ ने दूदाफल छोड़ दिए परन्तु फिर भी बच्चे जनती रही। राहेल ने दूदाफल ले लिए लेकिन फिर भी लगभग तीन वर्ष और तक बाँझ रही।

आयत 18. एक और पुत्र के जनने से, लिआ आनन्दित हुई और कहा, **"मैंने जो अपने पति को अपनी दासी दी, इसलिए परमेश्वर ने मुझे मेरी मज़दूरी** [שָׂכָר, *साकार]* **दी है।"** इसलिए उसने **उसका नाम इस्साकर रखा** जो कि *"साकार"* ("मज़दूरी" या "किराया") शब्द पर आधारित यमक अलंकार है; इसका अर्थ कुछ इस प्रकार से है, "[मेरी] मज़दूरी का पुरुष" या "किराए का पुरुष।"

आयतें 19, 20. लिआ फिर से गर्भवती हुई और याकूब से उसको छठवाँ [और अन्तिम] **पुत्र हुआ।** पहले के समान, लिआ ने उस पुत्र का नाम जबूलून रखने के दो स्पष्टिकरण देते हुए, परमेश्वर को ही इस जनने का ज़िम्मेदार ठहराया। पहले उसने कहा, **"परमेश्वर ने मुझे दान में** [זָבַד, *ज़बाद]* **अच्छा दान** [זֵבֶד, *ज़ेबेद*, "अक्षय निधि"[7]] **दिया है।"** ये दोनों शब्द पुराने नियम में केवल यहीं पर आते हैं। लिआ कदाचित शब्दों का एक अन्य अलंकारिक प्रयोग कर रही थी, क्योंकि इन शब्दों में जबूलून संज्ञा के पहले दोनों वयंजन *(ज़ब)* हैं।

इसके अतिरिक्त, उसने कहा, **"अब कि बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उससे छः पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं।"** जिस शब्द का अनुवाद "बना रहेगा" वह है זָבַל *(ज़बाल)*, जो एक और अलंकारिक शब्द प्रयोग है जिसमें

जबूलून के तीन वयंजन *(ज़बल)* हैं। इब्रानी शब्द का शायद सर्वोत्तम अर्थ "बना रहेगा" ना हो, जो कि पुराने नियम में केवल एक ही बार आया है। इसके स्थान पर अन्य अनुवादों में आया है "प्रतिष्ठित करना" (NJPSV) या "आदर" (RSV; NRSV; NIV; ESV)। लिआ केवल साथ रहना या बने रहना नहीं चाहती थी; वह याकूब से प्रेम, आदर और वफ़ादार पत्नी होने के नाते दुलार चाहती थी और उसे बहुत से पुत्र देना चाहती थी (देखें 29:34)।

आयत 21. कुछ समय बाद, लिआ की अन्तिम सन्तान पैदा हुई। उसने **उसका नाम दीना** [דִּינָה, *दीनाह्]* **रखा**, जो कि "दान" (דָּן, *दान)* का स्त्री वाची रूप है। ये दोनों ही शब्द इब्रानी क्रिया דִּין *(दिन)* से आए हैं जिसका अर्थ है "न्याय" या "न्याय चुकाना।" राहेल ने 30:6, में अपनी दासी के पहले पुत्र का नाम "दान" रखा, यह कहकर कि "परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया है।" लिआ ने इसी नाम से खेलते हुए अपनी नवजात पुत्री को "दीना" कहा। सात बच्चे जनने के बाद, उसने भी अपनी बहिन राहेल के विरुद्ध, जो अभी तक बाँझ थी, अपने आप को न्यायोचित समझा होगा (30:21)।

याकूब की वंशावली में केवल दीना ही उसकी एकमात्र **पुत्री** है (46:15), यद्यपि लेख उसके साथ मिस्र में जाने वाली "बेटियों" का उल्लेख करता है (46:7, 15; देखें 37:35)। इस प्रकट विरोधाभास को कैसे समझाया जा सकता है? उस संदर्भ में बहुवचन "बेटियों" केवल दीना के ही लिए प्रयुक्त माना जा सकता है जैसे कि 46:23 में पुत्र के लिए बहुवचन आया है जबकि दान का केवल एक ही वंशज था। एक अन्य संभावना है कि शब्द "बेटियों" में याकूब की बहुएँ भी सम्मिलित थीं (देखें रूत 1:7, 11)। सबसे कम संभावित स्पष्टिकरण है कि याकूब की अन्य पुत्रियाँ भी थीं जिनके नाम पवित्रशास्त्र में नहीं दिए गए हैं।[8]

इस लेख में दीना का उल्लेख उसका परिचय करवाता है अध्याय 34 की भयानक घटनाओं की तैयारी में जिनके कारण याकूब ने उसके दो भाईयों, शिमोन और लेवी को नापसंद किया (34:30, 31; 49:5-7)।

राहेल के पुत्र (30:22-24)

[22]और परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली। [23]सो वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; सो उसने कहा, परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है। [24]सो उसने यह कह कर उसका नाम यूसुफ़ रखा, कि परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा।

आयत 22. यह लघु दृश्य राहेल के बाँझ (29:31) होने के दुःखद प्रसंग का अन्त है और इस कथन के साथ समाप्त होता है कि **परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली।** यह पहले आए एक कथन को स्मरण दिलाता है: "परमेश्वर ने नूह की सुधि ली" (8:1; देखें 19:29; निर्गमन 2:24; भजन 106:45)। उस परिस्थिति में, परमेश्वर ने उनके पक्ष में कार्य किया जो जहाज़ में थे, और बाढ़ के पानी को पीछे

हटा दिया। इसी प्रकार से, जब लेखक कहता है, "परमेश्वर ने राहेल कि सुधि ली," इसका तात्पर्य था कि प्रभु ने उसकी आवश्यकताओं के लिए प्रतिक्रिया की। **उसने उसकी सुनकर** [प्रार्थना] **उसकी कोख खोल दी।**

आयत 23. प्रभु के इस कार्य का परिणाम था कि **वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ।** यह एक और पुष्टिकरण है कि परमेश्वर राहेल के गर्भवती होने और बच्चा जनने में निजी तौर से सम्मिलित था। उसका गर्भवती होना सुगंधित दुदाफलों को सूँघने से नहीं था।

अपने पुत्र के जन्म के साथ ही राहेल ने कहा, **परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है।** शब्द "नामधराई" (חֶרְפָּה, *खेरपा)* का अनुवाद "अपमान" (NIV; NJPSV), "लज्जा" (NCV), या "तिरिस्कार" (NEB; REB) भी हो सकता है। यह शब्द दिखाता है कि उसने बाँझ होने के कारण वर्षों सामाजिक कलंक और तिरस्कार सहा था।

आयत 24. राहेल ने अपने पुत्र का **नाम यूसुफ़** (יוֹסֵף, *योसेप)* रखा, जिसका अर्थ है "जोड़ना," "बढ़ाना," या "फिर से करना।"[9] फिर उसने बच्चे के नाम पर यह यमक अलंकार कहा: **परमेश्वर मुझे** [יֹסֵף, *यसाप,* 'मुझ से,' 'जोड़ दे'] **एक पुत्र और भी देगा।** अन्ततः राहेल ने एक और पुत्र, बिन्यामीन, को जन्म दिया परन्तु जनते हुए उसकी मृत्यु हो गई (35:16-19)।

याकूब का लाबान से अनुबंध रेवड़ों के लिए (30:25-43)

याकूब द्वारा मवेशियों का आवंटन (30:25-36)

[25]जब राहेल से यूसुफ़ उत्पन्न हुआ, तब याकूब ने लाबान से कहा, "मुझे विदा कर, कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊं। [26]मेरी स्त्रियां और मेरे लड़के-बाले, जिनके लिये मैं ने तेरी सेवा की है, उन्हें मुझे दे, कि मैं चला जाऊं; तू तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की है।" [27]लाबान ने उस से कहा, "यदि तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है, तो यहीं रह जा: क्योंकि मैं ने अनुभव से जान लिया है, कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है।" [28]फिर उसने कहा, "तू ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं, और मैं उसे दूंगा।" [29]उसने उस से कहा "तू जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे। [30]मेरे आने से पहिले वे कितने थे, और अब कितने हो गए हैं; और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे तो आशीष दी है: पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊंगा?" [31]उसने फिर कहा, "मैं तुझे क्या दूं?" याकूब ने कहा, "तू मुझे कुछ न दे; यदि तू मेरे लिये एक काम करे, तो मैं फिर तेरी भेड़-बकरियों को चराऊंगा, और उनकी रक्षा करूंगा। [32]मैं आज तेरी सब भेड़-बकरियों के बीच हो कर निकलूंगा, और जो भेड़ वा बकरी चित्तीवाली वा चित्कबरी हो, और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली हों, उन्हें मैं अलग कर रखूंगा: और मेरी मज़दूरी में वे ही ठहरेंगी। [33]और जब आगे को मेरी मज़दूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले, तब धर्म

की यही साक्षी होगी; अर्थात बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी हो, और भेड़ों में से जो कोई काली न हो, सो यदि मेरे पास निकलें, तो चोरी की ठहरेंगी।" [34]तब लाबान ने कहा, "तेरे कहने के अनुसार हो।" [35]सो उसने उसी दिन सब धारी वाले और चित्कबरे बकरों, और सब चित्तीवाली और चित्कबरी बकरियों को, अर्थात जिन में कुछ उजलापन था, उन को और सब काली भेड़ों को भी अलग कर के अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया। [36]और उसने अपने और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया: सो याकूब लाबान की भेड़-बकरियों को चराने लगा।

याकूब के हारान आने का उद्देश्य पूरा हो चुका था और अब वह अपने देश लौट जाना चाहता था। उसने केवल एक नहीं वरन दो पत्नियों और उनकी दासियों से भी से विवाह किया था। इन चार स्त्रियों में होकर, उसने ग्यारह पुत्रों और एक पुत्री का बड़ा परिवार बना लिया था। लेकिन कनान वापस लौट जाने की उसकी इच्छा में उसके ससुर, लाबान, ने बाधा डाल दी क्योंकि वह नहीं चाहता था कि वह जाए। याकूब से चालबाज़ी करके अपने पास उसकी सेवा को बनाए रखने के लिए उसने उसके साथ एक अनुबंध किया। लाबान की चालाकी के बावजूद परमेश्वर याकूब की देखभाल और उन्नति कर रहा था।

आयत 25. इस दृश्य के साथ इस वृतांत में एक निर्णनायक मोड़ आता है। चौदह वर्ष की सेवा और **राहेल** से **यूसुफ़** के उत्पन्न होने के पश्चात, **याकूब** ने **लाबान** से विनती की कि [उसे] **विदा करे**[10] जिससे वह वापस **अपने देश** (אֶרֶץ, *एरेट्स*, "देश") और स्थान बेर्शेबा (28:10) को जा सके। संभवतः जैसा कि लाबान ने समझा, यह वाक्य अपनी जन्मभूमि के लिए उसकी स्वाभाविक लालसा का प्रकटिकरण है। लेकिन, याकूब द्वारा उसे "अपने देश" कहा जाना अब्राहम (12:1; 13:15), इसहाक (26:3), और फिर बेतेल में याकूब से वाचा किए गए (28:13) देश की ओर संकेत करता है। कुलपति की इच्छा थी कि वह वापस जाकर निर्धारित की गई विरासत को यहोवा से अपने तथा अपने वंशजों के लिए प्राप्त कर ले।

आयत 26. याकूब ने लाबान से "[उसे] भेज देने" को कहने के द्वारा उससे अपनी **पत्नियों** और [अपने] **बच्चों जिन के लिए** उसने अपने ससुर की इतने वर्ष सेवा [की थी], ले जाने की अनुमति माँगी। इस आयत में दो बार याकूब ने क्रिया עָבַד *(आबाद)*, जिसका अनुवाद "सेवा करना" होता है; तथा एक बार इससे संबंधित संज्ञा עֲבוֹדָה *(अबोदाह)*, जिसका अर्थ "सेवकाई" है प्रयोग किया है। लाबान का भानजा और दामाद होने के कारण, उसका मानना था कि उसके मामा ने उससे धोखा करके तथा पत्नियों के लिए चौदह वर्ष (31:41) तक सेवकाई करवा के उसके साथ कठोर व्यवहार किया है। प्रकट रीति से उसके मामा ने उसे बिना कोई अधिकार रखने वाला दास अधिक समझा था बजाए दामाद के (31:43; देखें निर्गमन 21:2-6)।

आयतें 27, 28. लाबान का उत्तर पूर्वी शिष्टाचार के अन्तर्गत बातचीत की

विधि था, परन्तु चतुराई से भरा भी था। उसने याकूब की चले जाने की विनती को यह कहकर नम्रता पूर्वक नकार दिया कि **"यदि तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है, तो रह जा।"** इस प्रकार का अनुरोध आम बात थी यदि कोई आधीनस्त अपने से वरिष्ठ से वार्तालाप करता था (18:3; 33:10; 47:29; 50:4)। परन्तु, यह इस स्थिति में पाखण्डपूर्ण था क्योंकि **लाबान** जानता था कि याकूब आधीनस्त स्थिति में है, क्योंकि अपने बड़े परिवार के पालन पोषण के लिए उसके पास कुछ नहीं है। इसलिए उसने कहा, **"क्योंकि मैं ने अनुभव से जान लिया है, कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है।"** यह चौंका देने वाला कथन है: लाबान का जताना कि उसे यहोवा से यह देववाणी मिली है, एक प्रकार का जादू टोना था, जो व्यवस्था में प्रतिबंधित था (लैव्य. 19:26; व्यव. 18:10)।[11]

यह संभव है कि यहोवा ने लाबान की अन्यजाति रीतियों को सहन कर लिया हो (देखें 1 शमूएल 28:7-19) ताकि याकूब में होकर लाबान पर अपने आप को प्रकट करे कि उसकी संपदा का वास्तविक स्त्रोत वह ही है। लाबान ने बहुत वर्ष पहले अब्राहम के दास से यह जान लिया था कि वह और उसके स्वामी का परिवार यहोवा में दृढ़ विश्वास रखते हैं (24:1-61)। साथ ही, संभव है कि याकूब ने अपने परिवार पर प्रकट किया हो कि यहोवा ने उसे बेतेल में दर्शन दिया था (28:12-16), और वायदा किया था कि उसे आशीष देगा तथा अनेकों लोगों के लिए आशीष का स्त्रोत बनाएगा। लाबान जो पहले ही अपने आप को एक चतुर धोखेबाज़ प्रमाणित कर चुका था, संभवतः यहोवा के वायदे का और लाभ उठाकर याकूब को रहने और उसकी सेवा करने के लिए बाध्य कर रहा था। वह अपने प्रस्ताव को परमेश्वर की इच्छा के रूप में प्रस्तुत कर रहा था।

तदानुसार, उसने कहा, **"तू ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं, और मैं उसे दूंगा।"** हमेशा की तरह, लाबान का ध्यान आर्थिक बातों पर था। उसका यह कथन याकूब से किए गए पहले निष्ठुर अनुबंध और उसके साथ जुड़े धोखे को स्मरण करवाता है (29:15-20)। इस बिंदु पर आकर, लाबान याकूब के साथ एक नया अनुबंध बनाना चाहता था, जो उसे हारान ही में रहने को बाध्य कर दे।

आयतें 29, 30. अब की बार, याकूब ने अपने ससुर के प्रस्ताव को तुरंत ही स्वीकार नहीं कर लिया। वरन उसने प्रकट को कहा: **"तू जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे। मेरे आने से पहिले वे कितने थे, और अब कितने हो गए हैं; और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे तो आशीष दी है।"** याकूब के उत्तर ने वह दोहराया जो उसका ससुर पहले ही अंगीकार कर चुका था: कि परमेश्वर ने लाबान को उसके दामाद की उपस्थिति के कारण बहुतायत से आशीष दी है। याकूब ने फिर अपने परिवार के साथ जाने और अपनी समृद्धि को बनाने की इच्छा प्रकट की: **"पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊँगा?"**

आयतें 31-34. उसके प्रत्युत्तर में लाबान ने पूछा, **"मैं तुझे क्या दूँ?"** (30:31)। ऊपर से सुनने से ऐसा लगता है जैसे, यह एक बहुत ही उचित प्रश्न है; फिर भी उसने पहले ही इस बात को ज़ाहिर कर दिया था की वह अपने भांजे को

किसी प्रकार का विदाई उपहार नहीं देने वाला है। वास्तव में वह यह पूछ रहा था कि "मैं तुझे कितनी मज़दूरी दूँ (अपने यहाँ काम करते रहने के लिए)?" (देखें NJPSV; NJB; TEV)।

याकूब ने इतना नम्रता से अपना अनुरोध प्रस्तुत किया कि लाबान उसे मना नहीं कर सका। उसने अपने ससुर की भेड़-बकरियों को चराने और उनकी देखभाल करने का ज़िम्मा लिया अगर वह उसे उनके बीच हो कर निकलने दें, **और जो भेड़ या बकरी चित्ती वाली और चितकबरी हो** (30:32), और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी चितकबरी और चित्ती वाली हों, उन्हें अलग करने दें ताकि वे ही उसकी मज़दूरी ठहरें।[12] याकूब ने आगे कहा इस प्रक्रिया के द्वारा उसके ससुर के लिए उसकी ईमानदारी को परखना आसान होगा जब आगे को उसकी **मज़दूरी** की चर्चा होगी (30:33)।

याकूब की रखी शर्त लाबान के लिए बहुत फायदेमंद प्रतीत हो रही थी। प्राचीन पूर्व काल में ज़्यादातर भेड़ बकरियों का रंग वैसा नहीं होता था जैसा याकूब ने शर्त रखी: प्रायः भेड़ बकरियों का रंग सफ़ेद, काला या भूरा ही होता था न की चितकबरा। इसके अलावा चूंकि जिस रंग की मांग याकूब ने की थी वह बहुत ही दुर्लभ था इसलिए सारी भेड़ शाला का ज़्यादा से ज़्यादा 15 से 20 प्रतिशत ही होता। लाबान को लगा की याकूब का हिस्सा उसके दिए गए अनुमान से भी कम होगा क्योंकि साल के अंत में हिसाब किताब देना होता था और भेड़-बकरियों को किसी भी तरह का कोई नुकसान हुआ हो तो उसकी भी भरपाई चरवाहे ही को करनी होती थी।[13]

मामा लाबान इस बात से पूर्ण आश्वस्त था कि अगर उसने फिर से उसके मवेशियों की देख भाल करना स्वीकार किया तो वह एक बार फिर अपने दामाद का फ़ायदा उठा पायेगा। हालाँकि याकूब इस उदारपूर्ण प्रस्ताव तक ही सीमित नहीं रहा। उसने बहुत निर्भयता के साथ यह बात भी स्पष्ट कर दी कि यदि लाबान ने सफ़ेद भेड़ या काली बकरियां उसकी भेड़ शाला से प्राप्त की तो वह **चोरी समझीं जाएगी**। इसका अर्थ है कि अगर याकूब की पास से कोई भी गहरे रंग का जानवर निकला तो वह उसकी भरपाई अपने ससुर को करने के लिए तैयार है।[14]

ये सारी बातें **लाबान** के हक़ में जाती हुई प्रतीत हो रही थी, और उसने यह मान लिया होगा कि एक बार फिर वह याकूब को फँसाने या बेवकूफ़ बनाने में सफल हो गया है। इसलिए उसने कहा, **"बहुत अच्छा तेरे कहने के अनुसार हो"** (30:34)।

आयतें 35, 36. इन दो व्यक्तियों के मध्य में हुए इस अनुबंध को हुए अभी बहुत समय बीता भी नहीं था कि लाबान ने इसे तोड़ या दूषित कर दिया। असामान्य या असाधारण दिखने वाले जानवर याकूब को दिया जाना था ताकि वह अपना झुंड तैयार कर सके। उसके धोखेबाज़ मामा ने, यह जान कर कि उसका भांजा इस बात की प्रतीक्षा कर रहा कि और जो **भेड़ वा बकरी चित्ती वाली वा चितकबरी हो और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी चितकबरी वा**

चित्ती वाली, सारी जिसमें कुछ सफ़ेद रंग पाया जाए उसे प्राप्त हो जाए, इसलिए उसने उसी दिन उस तरह के सारे जानवरों को जो याकूब को मिलने थे अलग किया और **अपने बेटों को सौंप दिया**। तब लाबान आने अपने और **याकूब के बीच तीन दिन के मार्ग का अंतर ठहरा दिया**, और उसे अपनी बाकी भेड़ बकरियों को चराने के लिए छोड़ दिया। इस बात ने एक "चौड़े मध्यवर्ती क्षेत्र" को उत्पन्न कर दिया, जिससे खानाबदोशों का याकूब की चराई क्षेत्र में आने की सम्भावनाएं कम हो गई।[15]

याकूब का चालाकी पूर्ण उपाय (30:37-43)

[37]और याकूब ने चिनार, और बादाम, और अर्मोन वृक्षों की हरी छडिय़ां ले कर, उनके छिलके कहीं छील के, उन्हें धारीदार बना दिया, ऐसी कि उन छडिय़ों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी। [38]और तब छीली हुई छडिय़ों को भेड़-बकरियों के साम्हने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया; और जब वे पानी पीने के लिए आई तब गाभिन हो गई। [39]और छडिय़ों के साम्हने गाभिन हो कर, भेड़-बकरियां धारी वाले, चित्ती वाले और चित्कबरे बच्चे जनीं। [40]तब याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग किया, और लाबान की भेड़-बकरियों के मुंह को चित्ती वाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया; और अपने झुण्ड़ों को उन से अलग रखा, और लाबान की भेड़-बकरियों से मिलने न दिया। [41]और जब बलवन्त भेड़-बकरियां गाभिन होती थी, तब याकूब उन छडिय़ों को कठौतों में उनके साम्हने रख देता था; जिस से वे छडिय़ों को देखती हुई गाभिन हो जाएं। [42]पर जब निर्बल भेड़-बकरियां गाभिन होती थीं, तब वह उन्हें उनके आगे नहीं रखता था। इस से निर्बल लाबान की रही, और बलवन्त याकूब की हो गई। [43]सो वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया, और उसके बहुत सी भेड़-बकरियां, और लौंडियां और दास और ऊंट और गदहे हो गए।

आयतें 37-39. लाबान ज़रूर अपने द्वारा की गई चालाकी और अपने दामाद को बेवकूफ़ बनाने के द्वारा खुद पर बड़ा गर्व महसूस कर रहा होगा। बुद्धिमानी से भरे इस धोखा के लिए वह स्वयं को बधाई दे रहा होगा। फिर भी, इस बार **याकूब की अपनी ही एक योजना थी उसने चिनार, और बादाम, और अर्मोन वृक्षों की हरी-हरी छडिय़ां ले कर, उनके छिलके कहीं-कहीं छील के, उन्हें धारीदार बना दिया**, ऐसी कि उन छडिय़ों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी। और उन्हें भेड़-बकरियों के साम्हने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया.

और **जब वे पानी पीने के लिए आई तब गाभिन हो गई**। कुछ टीकाकार मानते है कि याकूब का ऐसे वृक्षों का इस्तेमाल करना जिसे छीलने से सफ़ेदी नज़र आये सिर्फ़ उसके श्रम का प्रमाण है ताकि वह "लाबान के उत्तम में से प्राप्त कर सके" (जिसका नाम का अर्थ सफ़ेद ही है) "सफ़ेद शाखाओं के माध्यम से।"[16] दूसरा सुझाव यह है, प्राचीन समय में, लोगों को लगता था की इस तरह के वृक्षों

में कुछ विषैले पदार्थ पाए जाते हैं और जो औषधि के रूप में इस्तेमाल किए जा सकते हैं, और उनकी भभक ने जानवरों के "मद चक्र को प्रारंभ कर दिया" और सहवास करने की उनकी लालसा को और बढ़ा दिया।[17] एक और संभावना यह भी हो सकती है कि जब याकूब "जानवरों" को छड़ियाँ सामने रख कर सहवास करवा रहा था तब वह एक प्रकार के प्रजनन की प्रक्रिया पर अमल कर रहा था जिसके द्वारा कमज़ोर वन्शाणु वाले जानवर बलवंत हो और उसकी इस शैली ने बलवंत भेड़ बकरियों को प्रेरित किया कि वे **धारीदार, चितकबरे और चित्तेदार** जानवरों को जन्म दे।[18] याकूब की इस तरह का उपाय या तो किसी अंधविश्वास की तरह थी या कोई जादू, जैसा की राहेल की योजना थी दूदाफल (दूदाफल) के लिए दोनों में ही इस बात को स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उन्हें आशीषें दीं उनके कार्यों पर बिना ध्यान दिए (30:23, 24; 31:5-13)।

आयत 40. इस आयत में कुछ दुविधा खड़ी हो रही है, जो यह कहती है कि **याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग किया, और लाबान की भेड़-बकरियों के मुंह को चित्ती वाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया**। जिस प्रक्रिया का वर्णन यहाँ पाया जा रहा ही वह आयत 30:35, 36 से मेल नहीं खाती जिसमें हम पढ़ते हैं कि लाबान ने सभी सब धारी वाले और चितकबरे बकरों, और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया था ताकि याकूब उनका इस्तेमाल प्रजनन के लिए न कर सके। इसके बावजूद इस समस्या को हल करने के दो उपाय है। इस आयत का प्रथम भाग "मेमनों" के प्रजनन की बात को दर्शाता है (הַכְּשָׂבִים, *हक्के शबिम*, "भेड़ के बच्चे"), परंतु शायद "जानवरों के झुंड" के सन्दर्भ में याकूब ने अपनी प्रक्रिया को संशोधित किया था (הַצֹּאן, *हत्सज़ोन*, "बकरियां") जैसा की 30:37-39 में हमें देखने को मिलता है।

इसके अलावा, 30:40 दो तरह की बकरियों के समूह का ज़िक्र करता है: "धारीदार" और "काली," इसलिए ऐसा प्रतीत होता है की याकूब ने उजले भेड़ों के बच्चों को अलग किया और उनका मुंह धारीदार बकरियों की तरफ़ (अपने झुंड की) और काली बकरियां (लाबान के झुंड की) कर दिया। धारीदार और काली बकरियों का मिश्रण उन वृक्षों की रंग बिरंगी "छड़ियों "के सामान था जिसे याकूब ने छिला था। इस तरह की कूट नीति के द्वारा, जिसका परमेश्वर की आशीषों के बिना कोई लाभ नहीं होता, याकूब काली भेड़े पाने में सफल हो गया जिन पर वह अपना अधिकार जमा सके। याकूब के द्वारा छ: साल तक लाबान के जानवरों को अलग-अलग उपायों का इस्तेमाल करते रहने से लेख में समस्या उत्पन्न हुई (देखें 31:41)।

आयतें 41, 42. कुल मिला कर जो विचार यहाँ देखने को मिलता है वह ये है कि याकूब ने **बलवान** मादाओं के इस्तेमाल से अपने लिए बलवान जानवर उत्पन्न किए और लाबान के झुंड के लिए कमज़ोर जानवरों को छोड़ दिया। जैसे-जैसे निर्बल जानवरों ने प्रजनन किया उसके मामा के झुंड के सभी जानवर भी निर्बल ही होते चले गए और याकूब के जानवर अधिक और बलवान हो गए।

आयत 43. आयत का यह भाग इस बात को बताते हुए समाप्त होता है की

याकूब अधिक संपन्न हो गया। "अत्यंत धनाढ्य" (פָּרַץ, *परात्स*) यह 28:14 से दोहराया गया है, जहाँ परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि याकूब का वंश "फैलेगा" यही शब्द 30:30 में भी नज़र आता है जहाँ याकूब कहता है कि कैसे लाबान की संपत्ति "बढ़" गई है। यहाँ इस बात का संकेत मिलता है कि लाबान के द्वारा याकूब को आत्मनिर्भर न बनने देने के प्रयासों के बावजूद परमेश्वर ने उसे आशीषित किया। याकूब के **बहुत सी भेड़-बकरियां, और लौंडियां और दास और ऊंट और गदहे हो गए।**

अनुप्रयोग

सफलता के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य (29:31-30:43)

कुलपति और उसने बाद के यहूदी लोग पितृत्व को परमेश्वर द्वारा दी गई विरासत मानते हैं (भजन 127:1, 3)। पारिवारिक भंडारीपन की इस प्रथा याकूब के मामले में, जिसके साथ परमेश्वर ने उस सभी वाचा को बाँधा जो उसने अब्राहम और इसहाक से बाँधी थी, काफ़ी उपयुक्त नज़र आती है। यहोवा ने देश की प्रतिज्ञा को दोहराया और कहा "और तेरा वंश भूमि की धूल के किनको के समान बहुत होगा, और पच्छिम, पूरब, उत्तर, दक्खिन, चारों ओर फैलता जाएगा: और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे" (28:14)।

इस तथ्य के प्रथम भाग में बहुत ही कम वर्णन पाया जाता है, परंतु इसमें अंतर और झगड़े का मुद्दा विकसित होते नज़र आता है, विशेषकर याकूब की दो पत्नियों के बीच: राहेल और लिआ: परमेश्वर ने याकूब को चुना था कि वह इस्राएल के बारह गोत्रों का जनक बने, परंतु उसकी दो प्रमुख पत्नियों के मध्य उठे झगड़े की वजह से उसे अपनी दो अन्य सहायक (दासी) पत्नियों (बिल्हा और ज़िल्पा) के साथ जुड़ना पड़ा। यह चार महिलाएं जिन्होंने एक बड़ा परिवार बनाने में याकूब की सहायता कि उन्होंने उसके लिए कई मुसीबतें भी खड़ी कर दी। जैसा की हमने पहले देखा है कि वह खंडित और प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थिति में पला बढ़ा था (25:28)। अब उसने एक ऐसे परिवार की स्थापना कर दी थी जिसमें जलन और फूट कई परेशान करने वाले तरीकों से सामने आ रहा था।

परमेश्वर ने अपनी दया से और अनुग्रह से व्यथित और अप्रिय लोगों को आशीष दी ताकि वह एक राष्ट्र बनाने की अपनी योजना को पूरा कर सके (29:31-35)। अध्याय 29:30 में लेखक कहता है कि याकूब "लिआ: से ज़्यादा राहेल से" प्रीति करता था। जब परमेश्वर ने देखा "कि लिआ: अप्रिय हुई, तब उसने उसकी कोख खोली" सो लिआ: गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया (29:31)। लिआ: इस पुत्र प्राप्ति से अत्यधिक प्रसन्न हुई और उसने उसका नाम "रूबेन" रखा जिसका शाब्दिक अर्थ है "देखो एक पुत्र" चूंकि उन दिनों पिता पुत्रियों से अधिक पुत्र की चाह रखते थे (भजन 127:4, 5)[19], उसने इस पुत्र के लिए परमेश्वर की महिमा की। आगे उसने कहा यहोवा ने मेरे दुख पर दृष्टि की है:

सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रखेगा जैसा की वह राहेल से रखता है (29:32)। उसकी यह सोच सही नहीं थी; ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। यीशु ने कहा "कोई भी दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकता" (मत्ती 6:24), यह तर्क दो पत्नियों पर भी लागू होता है। यह बिल्कुल असंभव है कि कोई व्यक्ति दोनों पत्नियों को बराबर खुश रखें और परिवार में शान्तिः बनाए रखें। यह बात बहु पत्नी प्रथा के खिलाफ़ एक अच्छा तर्क प्रस्तुत करता है।

फिर भी लिआ: इस आशा में जीती रही कि अगर याकूब इस बात को समझ जाए की उसका गर्भ परमेश्वर की ओर से आशीषित है तब शायद वह उससे अधिक प्रेम करेगा। एक अघोषित समय काल के बाद, उसने फिर से गर्भ धारण किया और अपने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। उसने इस बच्चे के जन्म का श्रेय यह कह कर परमेश्वर को दिया कि यहोवा ने यह "सुनकर" कि वह "अप्रिय" हुई ही उसे यह पुत्र दिया है, इसलिए उसने उसका नाम "शिमौन" रखा (29:33) - यह शब्द "सुनकर" इस बात को दर्शाता है कि वह अपनी दुःखी परिस्थिति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।

लिआ: उनमें से नहीं थी जो आसानी से हार मान ले। उसने राहेल को एक चीज़ में पछाड़ दिया था वह था बच्चे पैदा करने में। याकूब को भी चूंकि और पुत्र चाहिए थे इसलिए उसने उसे और प्रेरित किया; इस तरह वह फिर से गर्भवती हुई और अपनी तीसरी सन्तान को जन्म दिया। इस बार उसने सोचा कि उसका पति उससे "मिल जाएगा" इसलिए उसने उस पुत्र का नाम "लेवी" रखा जो इब्री शब्द से निकला है जिसका अर्थ है "जुड़ना" (29:34)। वह भले ही शारीरिक रूप से अपने पति से जुड़ी हो और उन दोनों ने मिलकर तीन पुत्रों को भी जन्म दिया हो परन्तु फिर भी कहीं न कहीं उसका हृदय अपने पति के साथ उस गहरे जुड़ाव को ढूंढता था जो वह याकूब और राहेल के बीच देखती थी।

लिआ: एक बार फिर से निराश हुई, पर वह प्रयास करने नहीं छोड़ने वाली थी। वह चौथी बार गर्भवती हुई और एक और पुत्र याकूब को दिया। यह बिल्कुल स्पष्ट है की वह परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना कर रही थी क्योंकि, इस जन्म के तुरंत बाद, उसने कहा" अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी," उसने अपने पुत्र का नाम "यहूदा" रखा जो इब्री शब्द "स्तुति" से बना है (29:35)। अपने चौथे पुत्र के जन्म के बाद लिआ: ने यह निर्णय लिया कि अब पति के द्वारा अप्रिय होनी की शिकायत परमेश्वर से नहीं करेगी। बल्कि इसके बदले उसने यह ठाना कि वह एक और स्वस्थ बालक के लिए यहोवा का धन्यवाद करेगी।

बाद के यहूदी इतिहास के अनुसार परमेश्वर ने लिआ: के मन में अपने पति के जो अटल प्रेम था उसका सम्मान किया, भले ही याकूब ने हमेशा लिआ: से बढ़कर राहेल से ही प्रीति क्यों न रखी हो। और इस बात का प्रमाण यह है कि लिआ: से इस्राएल के दो महान गोत्र निकले लेवी और यहूदा। पहला नंबर याजक गोत्र लेवी का था, जिसमें होकर मूसा, जो व्यवस्था का देने वाला था और उसका भाई हारून आया जो इस्राएल में याजकों के समाज का पिता ठहरा। दूसरा नंबर आता है यहूदा का जो राज गोत्र साबित हुआ, जिसके द्वारा इस्राएल का सबसे

महान राजा "दाऊद" उत्पन्न हुआ, और अंत में "राजाओं के राजा" और जगत के उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह ने भी इसी गोत्र में जन्म लिया (प्रका. 19:16)।

परमेश्वर ने अपने लोगों के मानवीय स्वभाव और गलतियों के बावजूद, अपने अनुग्रह के द्वारा उन्हें आशीष दी। भले ही राहेल याकूब की सबसे प्रिय थी, सच्चाई यह है कि वह गर्भ धारण करने और संतान उत्पन्न करने में असमर्थ थी और इसकी वजह से वह अपनी बहन से डाह करने लगी। बाईबल के समय में, लोगों को लगता था बाँझपन एक गंभीर पीड़ा या वेदना है। फिर भी लिआ: के विपरीत, कहीं भी ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता जहाँ राहेल ने अपने बांझपन के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की हो। वह अपनी कुंठा रो-रो कर अपने पति पर ही निकाल रही है। जैसे की वह इस बात के लिए ज़िम्मेदार हो, उसने उससे यह मांग की "मुझे भी संतान दे, नहीं तो में मर जाऊँगी" (30:1)।

अपनी गलतियों या असफलताओं के लिए दूसरों पर दोष लगाने वाली मानव प्रवृत्ति अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के साथ आरम्भ हुई थी (3:1-13), और आज तक यह बात चली आ रही है। बल्कि, यह मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। अपने पाप या असफलता को मान लेने से हमारी योग्यताओं और अहंकार पर चोट लगती है, और यही बात हमारे हर शारीरिक कमज़ोरी पर भी लागू होती है। चेतना से देखा जाए तो इस बात में कोई तर्क नहीं था की वह अपनी कमज़ोरियों या संतान उत्पन्न कर पाने की असमर्थता का दोष याकूब पर लगाए, चूंकि वह उसकी बहन के द्वारा चार पुत्रों का पिता बन चुका था इसलिए, उसका बाँझपन याकूब की उसमें कम रूचि के कारण नहीं था, क्योंकि राहेल के लिए उसके हृदय में सच्चा प्रेम था, एक ख़ास जगह थी जो लिआ: के पास नहीं थी। बच्चे की मांग करने पर याकूब का क्रोध राहेल पर भड़का, और उसने एकाएक उत्तर दिया "क्या मैं परमेश्वर हूं? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है?" (30:2)।

अपनी घोर निराशा में, राहेल ने उसी प्रथा का सहारा लेने का निर्णय किया जो सारा ने अब्राहम के साथ किया था (16:1-4): वह अपनी दासी बिल्हा को याकूब को देती है, और जो संतान उनसे उत्पन्न होगी उस पर कानूनन अधिकार उसका होगा (30:3)। इस तरह का कृत्रिम मातृत्व (सरोगेट मातृत्व) में हम पुनः देखते है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को प्राचीन काल की कुछ ऐसी प्रथाओं का पालन करने दिया जो बाद में मूसा की व्यवस्था और नए नियम में अस्वीकार कर दी गई है।

जब बिल्हा के दो पुत्रों ने जन्म ले लिया तब राहेल ने उनके लिए ऐसे नामों का चुनाव किया जो लिआ: के दिए हुए नामों से बिल्कुल भिन्न थे। एक ओर जहाँ लिआ: ने ऐसे नाम चुने जिनमें उसके विश्वास और धन्यवाद से भरे हृदय की झलक थी, वही दूसरी तरह राहेल के चुनाव में अपनी बहन के प्रति जलन और कड़वाहट दिखाई दे रही थी। उसने बिल्हा के पहले पुत्र का नाम दान रखा ("बदला लेना") और कहा, "परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया है" (30:6)। फिर उसने अपने दूसरे पुत्र का नाम "नाप्ताली" रखा, जिसका अर्थ है की वह अपनी

बहन से "मल्लयुद्ध" करके जीत गई (30:4-8)। यह झगड़ा उस झगडे से अलग था जो आमतौर पर परिवार में भाई बहनों के मध्य देखने को मिलता है। दो बहनों के बीच यह विनाशकारी जलन और बैर उसके बराबर नहीं हो जो कैन ने अपने भाई हाबिल के प्रति की थी, यहाँ तक की उसने उसकी हत्या भी कर दी (4:3-8), परंतु उनके पुत्रों के व्यवहार के कारण यूसुफ़ की कहानी में एक दुखद अंत देखने को मिलता है (37:2-20)।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, लिआ: ने देखा की अब वह बच्चे उत्पन्न नहीं कर पा रही है इसलिए उसने भी राहेल के जैसे अपनी दासी ज़िल्पा को याकूब को दिया। इस तरह से दोनों बहनों की बीच प्रतियोगिता चलती गई; बड़ी बहन किसी भी तरह छोटी बहन को संतोष का एहसास नहीं होने देना चाहती थी। लिआ: ने ज़िल्पा के प्रथम पुत्र को यह कह कर "गाद" नाम दिया कि इसके जन्म के द्वारा अच्छा "भाग्य" पाया (30:9-11)। उसकी दासी के द्वारा जब दूसरा पुत्र जन्मा तब लिआ: ने उसे "आशेर" नाम दिया, जिसका अर्थ है "धन्य" और यह कहा, निश्चय स्त्रियां मुझे "धन्य" कहेंगी (30:12, 13)।

दो बहनों के मध्य प्रतिस्पर्धात्मक बैर, गेहूं की कटाई दौरान और पनपा, जब रूबेन कुछ दूदाफल प्राप्त करता है और अपनी माँ लिआ: के पास लेकर जाता है। प्राचीन पूर्वी लोग इस पौधे को कामोत्तेजक और प्रजनन को बढाने वाला मानते थे, इसलिए राहेल ने लिआ: से कुछ दूदाफल माँगा। उसने उसे कड़े शब्दों में उत्तर दिया, और यह दर्शाया उसने उसका पति तो उससे छीन ही लिया है और अब उसके पुत्र का दूदाफल भी लेना चाहती है। राहेल की पकड़ अपने पति पर इतनी मज़बूत थी कि उसकी बहन को भी उसके पास जाने से पहले राहेल की अनुमति लेनी पड़ती थी। गर्भधारण करने की तीव्र इच्छा के कारण, वह इस बात के लिए मान गई की याकूब आज रात लिआ: के साथ सोए; पर उसके बदले उसने रूबेन के दूदाफल में से कुछ देने की मांग की (30:14, 15)।

इस तरह से लिआ: ने एक रात के लिए उसके पति को "किराए" पर ले लिया, ताकि वह गर्भवती होकर पाँचवें पुत्र को जन्म दे सके। इस बालक के लिए उसने "इस्साकार" नाम चुना, जो इस तथ्य पर था कि उसने अपने पति को वैवाहिक संबंध बनाने के लिए किराय पर लिया, जुगत बोलने जैसा था (30:16-18)। कुछ समय के बाद, लिआ: ने अपने छठे और अंतिम पुत्र को जन्म दिया जिसे उसने "जबूलून" कह कर पुकारा क्योंकि वह उसे परमेश्वर से प्राप्त "भेंट" के रूप में देख रही थी। वह अभी भी कहीं न कहीं यह आशा कर रही थी की छः पुत्र देने की कारण उसका पति उससे प्रेम करेगा (30:19, 20)। अंत में लिआ: ने अपनी अंतिम संतान एक लड़की को जन्म दिया। उसे उसने "दीना" नाम दिया क्योंकि उसे यह विश्वास था की परमेश्वर ने उसे "दोष मुक्त" किया है (30:21)। बाईबल कहीं इस बात को ज़ाहिर नहीं करती की इसके बाद लिआ: ने अपने पति के साथ एक रात गुज़ारने के लिए और गर्भ धारण करने के लिए अपनी बहन राहेल से सौदे बाज़ी की हो। फिर भी आगे की कहानी से ये बात स्पष्ट है की दोनों बहनों के मध्य संघर्ष बना रहा, इस तरह यह लेख बहु विवाह प्रथा की त्रासदी

का उल्लेख करता है।

अंत में लेख यह भी बताता है कि "परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली" और उसे भी पुत्र उत्पन्न करने के योग्य बनाया (30:22)। प्राकृतिक ढंग से स्वयं संतान उत्पन्न करने के बाद, उसने कहा की परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है और उसकी "नामधराई" दूर की है। उसने उसका नाम यूसुफ़ रखा और परमेश्वर से "एक और पुत्र देने की प्रार्थना की" (30:23, 24)।

यह भाग अप्रिय लिआ: और बाँझ राहेल के साथ आरम्भ हुआ था (29:31); और अब यह दो बहनों के बीच जलन और दुखद संघर्षों और साथ ही साथ उनके पथभ्रष्ट षड्यंत्रों तक पहुँच चुका था। इस पूरी घटना में, दोनों बहनों और उनकी दासियों ने परमेश्वर के अनुग्रह से संतान प्राप्त की थी। इस वृत्तांत का अंत यूसुफ़ के जन्म के साथ हुआ। राहेल ने यह गवाही दी कि परमेश्वर ने उसकी नामधराई को दूर किया है, और लेखक ने इस बाइबलीय धर्म विज्ञान की तरफ़ हमारा ध्यान खींचा है। सिर्फ़ एक प्राकृतिक घटना होने के बजाय इस बच्चे जा जन्म इसलिए हुआ "परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली" (30:22)।

"सुधि लेना" एक धर्म विज्ञानिक अवधारणा है, जिसके अंतर्गत परमेश्वर एक क्रिया शील वाचा का सम्बन्ध होता है। इसमें परमेश्वर और वे लोग सम्मिलित होते जिन्हें वह स्मरण करता है। जब परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के विषय की गई अब्राहम की प्रार्थना को स्मरण किया, तब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिन में लूत रहता था, उलट पुलट कर नाश किया, पर लूत को उस घटना से बचा लिया (19:29)। कई सौ वर्षों बाद, जब इस्राएली मिस्र की बंधुवाई में थे, और कठिन सेवा के कारण लम्बी-लम्बी साँसें भर रहे थे, वचन बताता है की "परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, और इसहाक, और याकूब के साथ बान्धी थी, स्मरण किया" (निर्गमन 2:24)। उसने उन्हें दासत्व से छुडाने के लिए मूसा का इस्तेमाल किया। निर्गमन के कई सदियों बाद, इस्राएली अपना देश हार बैठे और अश्शूर और बाबुल की दासत्व में चले गए। उनकी अंतिम आशा परमेश्वर की विश्वासयोग्य स्मृति या याददाश्त पर टिकी थी, जो उनके पक्ष में कार्य करेगी (नहेम्य. 1:8, 9; यशा. 49:15, 16)। पूरी बाईबल में, उद्धार के सुसमाचार का केंद्र परमेश्वर द्वारा स्मरण किया जान ही रहा है। परमेश्वर का अटल प्रेम और अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा अंत में प्रभु यीशु मसीह में और के द्वारा पूरी हुई (लूका 1:67-79; गला. 3:6-8, 16-18, 26-29)।

परमेश्वर ने, अपने अनुग्रह के द्वारा लोगों के लिए कनान का मार्ग सीधा किया ताकि वे विरोध, धोखे, और बेवकूफ़ियों से भरे षड्यंत्रों के बावजूद उसकी आशीषों का आनंद उठा सके। जैसे ही राहेल ने यूसुफ़ को जन्म दिया, याकूब अपने परिवार के साथ कनान जाने को तैयार था। परमेश्वर ने उस भूमि को उनकी असली विरासत के रूप में उन्हें देने की प्रतिज्ञा की थी। लाबान ने

चालाकी से उससे दोनों पत्नियों के लिए चौदह वर्षों की सेवा ले ली थी, इसलिए उसने अपने ससुर से कहा की अब वह उसे उसकी दोनों पत्नियों और बच्चों समस्त "अपने देश" लौट जाने दे (30:25, 26)। लाबान बेशक, अपने दामाद और उससे मिल रही सेवाओं को जाने नहीं देना चाहता था क्योंकि उसे इस बात का अनुमान था कि परमेश्वर ने याकूब के कारण उसे भी बहुतायत से आशीषित किया है। इसलिए उसने अपने भांजे से पूछा की वह उसके काम के बदले उसे क्या दे सकता है; हालांकि याकूब कोई मज़दूरी नहीं चाहता था जिसे वह खर्च करे, पर वह जानवर भेड़ और बकरियां चाहता था ताकि कनान की अपनी यात्रा के दौरान अपने परिवार और लोगों का पालन पोषण कर सके और एक बार वे कनान पहुँच जाए तब वहां एक घर का निर्माण कर सके (30:27-30)।

याकूब ने एक बहुत ही उदार पूर्ण प्रस्ताव रखा था, जब उसने अनिश्चित काल के लिए लाबान की सेवा करना स्वीकार किया, अगर उसने उसे सभी चितकबरे धारीदार भेड़े और सभी काली बकरियों को दिया होता। इस साथ-साथ, उसने चित्तेदार और चितकबरी बकरियों की भी मांग की थी। यह बद रंग या विचित्र रंग वाले जानवर उसके ससुर के झुंड का एक छोटा हिस्सा ही होते। लाबान ने हालांकि, अपने दामाद की बात मानने में ज़रा भी देर नहीं की क्योंकि उसे लगा वह एक बार फिर उसे चकमा दे देगा और इस सौदे में सारा फ़ायदा उसी का होगा।

लालच के वशीभूत होकर, लाबान इस समझौते से मुकर गया। याकूब से और ज़्यादा फ़ायदा लेने के इरादे से, उसने वे सभी बहु रंग वाले और काली भेड़ों को अपने झुंड से निकाल दिया। और उन्हें याकूब से तीन दिन की यात्रा की दूरी पर ले जाकर अपने पुत्रों को सौंप दिया। इस छल से भरी युक्ति ने एक बार फिर लाबान के वास्तविक चरित्र को उजागर किया है: वह एक लालची और अकृतज्ञ व्यक्ति था जो अपनी बेटियों के पति तक से धोखा करने से नहीं चूका। यह योजना लाबान की दृष्टि में विश्वसनीय और आसान प्रतीत हुई होगी। इसने उसके भांजे को केवल गहरे रंग के जानवरों तक ही सीमित कर दिया था, और लाबान को यह शक था की क्या यह कभी भी असामान्य रंग के इतने जानवर पैदा कर पाएंगे जिससे एक बड़े परिवार का पालन पोषण हो सके पूरी कनान तक की यात्रा के दौरान। इस धूर्त मामा ने एक बार फिर से अपने दामाद पर भारी पड़ने के लिए स्वयं को बधाई दी होगी। वह स्पष्ट रूप से याकूब के लिए हारान छोड़कर जाना कठिन करना चाहता था क्योंकि वह चाहता था की परमेश्वर याकूब के कारण उसे भी आशीषित करता रहे (30:27, 31-36)।

लाबान याकूब के द्वारा परमेश्वर की आशीष प्राप्त करना चाहता था, पर उसे परमेश्वर नहीं चाहिए था। उसकी मनसा यही थी कि वह अपने दामाद के द्वारा चालाकी करे और परमेश्वर से अपनी संपत्ति बढ़वाए। लाबान उनमें से था जिसने कठिनाई से यह सीखना था कि "परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा" (गला. 6:7)। झूठ बोने और अधिक संपत्ति की चाह में छल कपट करने के द्वारा उसने हार की कटाई की, जिसमें उसके भांजे

के द्वारा आई निर्धनता भी शामिल थी, जिसे उसने कई वर्षों तक धोखा दिया और छल किया।

यदपि याकूब के पास भी एक योजना थी, जिसमें चिनार, और बादाम, और अर्मोन वृक्षों की हरी हरी छडिय़ां ले कर, उनके छिलके कहीं कहीं छील के, उन्हें धारीदार बना दिया, ताकि सफ़ेदी दिखाई देने लगे (30:37)। उसने छीली हुई छडिय़ों को भेड़-बकरियों के साम्हने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया; और जब वे पानी पीने के लिए आई तब गाभिन हो गई। जब बलवान जानवर सहवास करते, तब वह उन छिली हुई छड़ियों को उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा कर देता और इस तरह से यह जानवर असामान्य रंग के बच्चे उत्पन्न करते जो अन्य नवजात से ज़्यादा बलवान साबित होते। भेड़ों और बच्चों के जन्म पर याकूब असामान्य रंग वाले जानवरों को अपने लिए अलग करता। और बाकी लाबान के झुंड में जाते। कई सालों तक इसी प्रक्रिया का पालन करते-करते याकूब के बलवान, और चितकबरे जानवर अत्यधिक बढ़ गए। उसी बीच लाबान के जानवर निर्बल और आकार में कम होते चले गए। अपने मामा को छः साल की अतिरिक्त सेवा देने के बाद (31:41), कुलपति जानवरों के बड़े झुंड, दास दासी और बहुत से ऊँट और गधों के साथ धनी और संपन्न हो गया (30:37-43)।

कुछ लोगों का यह मानना है कि याकूब को यह सफलता इसलिए मिली क्योंकि जानवरों के प्रजनन के विषय में उसका ज्ञान बढ़कर था। कुछ यह भी स्वीकार करते है सहवास करते वक़्त जानवर जो भी दृश्य देखते है वह भी उनके बच्चों पर असर करता है। तौभी याकूब के द्वारा छड़ी को छीलने के पीछे कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जिससे उसके झुंड के लिए चितकबरे जानवरों का जन्म हो, ठीक वैसे जैसे राहेल ने भी दूदाफल से गर्भ धारण नहीं किया था। दोनों ही एक प्रकार का अंध विश्वास था जिसका होने वाले परिणाम से कोई लेना देना नहीं था। हो सकता है चुनकर प्रजनन करवाने के कारण याकूब को कुछ फ़ायदा पहुंचा हो, परन्तु 31:1-13 इस बात को पूरी तरह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ने ही उसे लाबान के षड्यंत्रों पर सफलता दी जो उससे छल करना चाह रहा था। परमेश्वर अपनी की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार याकूब और उसके वंशज को आशीषित और बढ़ाना चाहता था (12:1-3; 28:13-15)। उसने याकूब के जीवन में हस्तक्षेप किया और उसे उसकी माता के सम्बन्धियों के घर तक ले गया, ताकि वहां वह विवाह करे और अपना परिवार और झुंड बनाए। लाबान का कोई धोखा या याकूब और उनकी पत्नियों का कोई अंध विश्वास परमेश्वर की योजना को पूरा होने से नहीं रोक सका।

समाप्ति नोट्स

[1]उत्पत्ति में डाह बारंबार दिखाई देने वाला विषय है। क्रिया “डाह करना” (קָנָא, *काना')* इसहाक के प्रति फिलिस्तियों के रवैये में प्रयुक्त हुआ है (26:14), राहेल की लिआः के प्रति ईर्ष्या के लिए (30:1), और यूसुफ़ के भाईयों की उसके प्रति ईर्ष्या के लिए (37:11)। [2]जी. लेईड्के, “דִּין,”

थियोलोजिकल लेक्सिकॉन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट में, मार्क ई. बिडुल, एड. एन्र्स्ट जेन्नी एन्ड क्लौस वैस्टरमैन (पीबौडी, मस्स.: हेन्ड्रिकसन पब्लिश्रर्स, 1997), 1:335-36. [3]ऐसी ही भाषा का प्रयोग 32:24, 25, में हुआ है जब याकूब ने एक स्वर्गदूत के साथ मल्ल्युद्ध किया। [4]जॉन टी. विलिस, *जेनिसिस*, द लिविंग वर्ड कमेन्ट्री (औस्टिन, टेक्स.: स्वीट पबलिशिंग कम्पनी, 1979), 342. [5]विक्टर पी. हैमिल्टन ने लिआः के कथन की तुलना नए नियम में मरियम के कथन से की है: "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई ... इसलिए देखो, अब से सब युग युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे।" (लूका 1:46-48)। (विक्टर पी. हैमिल्टन, *द बुक ऑफ जेनिसिस: चैप्टर्स 18-50*, द न्यू इन्टरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेन्ट [ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग कम्पनी, 1995], 273.) [6]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनिसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कॉमेन्ट्री, वोल. 1बी (नैशविले: ब्रॉडमैन & होलमैन पबलिशर्स, 2005), 486-87. [7]कुछ अनुवाद *ज़ेबेद* को "दहेज" बताते हैं (ASV; RSV; NRSV; NEB; REB)। [8]विलिस, 389-90, 431. [9]पौल आर. गिलक्रिस्ट, "יוֹסֵף," *TWOT* में, 1:385. [10]कथन "मुझे जाने दे" अब्राहम के दास ने भी कहा था, जो बहुत वर्ष पहले इसहाक के लिए पत्नि लेने हारान गया था (24:56)।

[11]इस प्रथा पर और अधिक जानकारी के लिए, देखें डेविड ई. औने, "डीवाइनेशन," *दी इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया*, नवीन संस्करण, सम्पादक ज्यॉफ्री डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एड्र्समैन पब्लिशिंग कंपनी, 1979), 1:971-74. [12]चरवाहों को अकसर जानवरों के गौण उत्पादों से प्रद्दत किया जाता था, जिसमें दूध और ऊन का कुछ प्रतिशत शामिल होता उन्हें कभी नवजात पशु भी दिए जाते थे। [13]निर्गमन 22:12, 13, की तुलना करे जिसमें प्राचीन पूर्व में लम्बे समय से चली आ राही प्रथा का ज़िक्र मिलता है जो बाद में मूसा की व्यवस्था में भी शामिल किया गया था। [14]एक मेमने या बकरी के बच्चे को चुराने की भरपाई हारान में किस रूप में की जाती थी यह बात अज्ञात है, परंतु हम्मररबी (अठारहवीं शताब्दी ई.पू.) इस बात का संकेत देता है कि अगर कोई मालिक के घर से कोई भेड़ या मवेशी चुराए तो उसे उसका दस गुना भरना होगा। (*द कोड आग हम्मरर* 8, 265.) [15]मैथ्यूज़, 500. [16]रोनाल्ड यंगब्लड, नोट्स आन जेनेसिस, इन *द NIV स्टडी बाईबल*, एड. केनेथ बारकर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 51-52; देखें गोर्डन जे. वेन्हम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 2 (डल्लास: वर्ड बुक्स, 1994), 257. "लाबान" के लिए इब्री शब्द "सफ़ेद" के सामान है (לָבָן, *लाबान)* जो "पोपलर" (לִבְנָה, *लिबनेह)*। इस समानता की तुलना "एदोम" (एसाव) और "लाल" खिचड़ी (25:25, 30)। [17]नहूम एम. सरना, *जेनेसिस*, द जे.पी.एस टोरह कमेन्ट्री (फिलाडेलफिया: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1989), 212. [18]जॉन इ. हार्टले, *जेनेसिस*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पीबाडी, मास.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2000), 269-70. [19]केवल पुत्रों का ही यह अधिकार था की वे नगर के दरवाज़े पर अन्य पुरुषों के साथ बैठ कर समाज से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय ले सकें (देखें रूत 4:1-6)।